जंतुओं पर शोध का घोषणा पत्र

हाल ही में स्विट्ज़रलैण्ड में कई युरोपीय वैज्ञानिकों ने एक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं जिसमें कहा गया है कि जंतुओं पर अनुसंधान कार्य को पूरी तरह रोकना नामुमकिन है मगर इस मामले में ज़्यादा पारदर्शिता की ज़रूरत है।

दरअसल युरोप के कई देशों में जंतु अधिकार कार्यकर्ताओं व समूहों ने कई ऐसी प्रयोगशालाओं को अपने हिंसक हमलों का निशाना बनाया है जहां जंतुओं पर प्रयोग किए जाते हैं। इसके अलावा सरकारें व अदालतें भी बढ़ते क्रम में जंतु अनुसंधान पर प्रतिबंध लगा रही हैं। इस दबाव के चलते ही स्विट्ज़रलैण्ड के बेसल शहर में युरोप के करीब 50 वैज्ञानिकों की एक बैठक में उपरोक्त घोषणा पत्र तैयार किया गया।

घोषणा पत्र में मूलतः यह कहा गया है कि जंतुओं पर प्रयोगों से पूरी तरह छुटकारा पाना संभव नहीं है। बैठक में उपस्थित वैज्ञानिकों का मत है कि लोगों में यह धारणा बनती जा रही है कि सारे जंतु प्रयोगों के ऐसे विकल्प मौजूद हैं जिनमें जंतुओं का उपयोग न किया जाए। वैज्ञानिकों के मुताबिक यह धारणा सही नहीं है। घोषणा पत्र में कहा गया है कि ऐसे प्रयोगों के बारे में वैज्ञानिकों व प्रयोगशालाओं को चाहिए कि वे आम लोगों से बेहतर संवाद स्थापित करें और नैतिकता समितियां ज़्यादा प्रभावी भूमिका निभाएं।

वैज्ञानिकों ने एक और बात पर चिंता ज़ाहिर की है। युरोप के कई देशों की अदालतों ने यह रुख अपनाया है कि जंतुओं के उपयोग से यदि तत्काल कोई लाभ मिलने की उम्मीद है, तो उसकी अनुमति दी जाए मगर बुनियादी अनुसंधान के मामले में अनुमति न दी जाए। वैज्ञानिकों को लगता है कि यह रवैया गलत है। एक तो वे कहते हैं कि इस तरह से व्यावहारिक रूप से उपयोगी और बुनियादी अनुसंधान के बीच विभाजन उचित नहीं है, और दूसरा कि कई बार बुनियादी अनुसंधान के बगैर व्यावहारिक अनुसंधान संभव ही नहीं होगा।

बेसल घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले वैज्ञानिकों ने यह स्वीकार किया है कि अनुसंधान में जंतुओं के अनावश्यक उपयोग को कम किया जाना चाहिए और यथासंभव कम से कम जंतुओं का उपयोग होना चाहिए। यदि जंतु प्रयोगों के विकल्प उपलब्ध हैं तो उन्हें अपनाने की तैयारी भी होनी चाहिए। मगर वे यह मानने को तैयार नहीं हैं कि पूरी तरह जंतु प्रयोगों के बगैर काम चल जाएगा। ***(स्रोत फीचर्स)***